

हिंदी शब्द संसाधन/टंकण परीक्षा - जनवरी, 2023
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
हिंदी शिक्षण योजना, परीक्षा स्कंध

प्रश्न पत्र - प्रथम II

बैच - I

समय : 10 मिनट

पूर्णांक : 50

मनुष्य जीवन भर यही सीखने की कोशिश करता रहता है कि दूसरों के साथ वह अच्छा व्यवहार करे। दूसरों को वह अपने अच्छे व्यवहार से प्रभावित करे। लेकिन यह नहीं सीख पाता कि वह अपने स्वयं के साथ कैसा व्यवहार करे? समस्याओं की जड़ है स्वयं को एवं स्वयं की क्षमताओं को नकारना। मनुष्य बहुत सारे कार्य करता है। मंदिर, मस्जिद जाकर गीता अथवा कुरान जपता है। अपने शरीर की भी अवहेलना करके भाग-दौड़ में लगा रहता है। उसका सारा ध्यान संसार पर केंद्रित होता है। अपने सुख और आनंद के लिए एक घेरे में लगातार चक्कर लगाता है जबकि सुख का स्रोत वहां है ही नहीं। खुद को हर पल में स्वीकार करना और स्व से प्रेम करना ही सुख का मूल है। हम जैसे भी हैं, अपने आप में बेहतरीन हैं। यही भावना और विश्वास जगाएं और अपने गुण-दोषों का आकलन करें।	61 132 203 272 346 418 492 563 634 712 757
एक बहुत प्रसिद्ध गुरु ने कहा है कि हम अपने-अपने धर्म में विश्वास रखते हैं। हमारा मस्तिष्क ज्ञान का भंडार है, हमारा हृदय ही मंदिर है और दयालुता जीवन दर्शन है। किसी व्यक्ति के स्वयं के साक्षात्कार न होने को इस तरह से समझा जा सकता है। कदाचित इस तरह के व्यक्ति स्वयं को समझ नहीं रहे हैं। वे सक्रिय हैं और पर्याप्त कार्य कर रहे हैं लेकिन स्वयं के बारे में कभी सोचते ही नहीं हैं अथवा वे अपनी क्षमताओं एवं सीमाओं से अवगत नहीं हैं। इसलिए अपनी ही धुन अथवा दिशा में घूम रहे हैं। जबकि अपने गुण या दोषों को खोजकर उसी अनुसार आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि हम जो कार्य कर रहे हैं उनसे बेहतर करने की क्षमता हमारे भीतर विद्यमान है।	829 903 978 1044 1127 1202 1281 1353 1413
हम केवल सांसारिक चीजों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हम अपने निजी हितों के लिए दौड़ रहे हैं। अपने लाभ के लिए नैतिक और अनैतिक कार्य कर रहे हैं। हमें इस प्रचलित घेरे से बाहर आना होगा। स्वयं को जानने एवं स्वयं से साक्षात्कार करने के लिए हमें नए सिरे से विचार करना होगा। इस तरह अपने आप में सुधार करते हुए हम न केवल अपनी परेशानियों और समस्याओं को हल कर सकेंगे बल्कि सुख और आनंद का भी अनुभव प्राप्त कर सकेंगे।	1480 1555 1634 1707 1777 1849